राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020
सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर, उ. प्र.
स्नातक पाठयक्रम के सेमेस्टरवार प्रश्नपत्र
विषय : हिन्दी साहित्य

वर्ष	सेमेस्टर	कोर्स कोड	प्रश्नपत्र का शीर्षक	लिखित/प्रयोगात्मक	केडिट्स
बी0ए0 प्रथम वर्ष	प्रथम	A010101T	हिन्दी काव्य	लिखित	06
बी0ए0 प्रथम वर्ष	द्वितीय	A010201T	हिन्दी साहित्य का इतिहास	लिखित	06
बी0ए0 द्वितीय वर्ष	तृतीय	A010301T	हिन्दी गद्य	लिखित	06
बी0ए0 द्वितीय वर्ष	चतुर्थ	A010401T	प्रयोजनमूलक हिन्दी/हिन्दी में रचनात्मक कौशल	लिखित	06
बी0ए0 तृतीय वर्ष	पंचम	A010501T	साहित्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	पंचम	A010502T	राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी–काव्य/भारतीय साहित्य	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	पंचम	A010502T		परियोजना कार्य	03
बी0ए0 तृतीय वर्ष	षष्ठ	A010601T	भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	षष्ठ	A010602T	लोक साहित्य/अवधी–भोजपुरी साहित्य	लिखित	05
बी0ए0 तृतीय वर्ष	षष्ठ	A010602T		परियोजना कार्य	03

निर्देश :

1. यह पाठ्यक्रम बी. ए. में हिन्दी का मुख्य (मेजर) विषय के रूप में चयन करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए है।
2. बी. ए. प्रथम वर्ष के दोनों प्रश्नपत्र सभी के लिए अनिवार्य (CORE PAPER) होंगे।
3. द्वितीय वर्ष के तृतीय सेमेस्टर में पढ़ाया जाने वाला **'हिन्दी गद्य'** प्रश्नपत्र अनिवार्य होगा, परंतु चतुर्थ सत्र में पढ़ाये जाने वाले **'प्रयोजनमूलक हिन्दी'** नामक प्रश्नपत्र का विकल्प भी **'हिन्दी में रचनात्मक कौशल'** नाम से होगा। विद्यार्थी इस सेमेस्टर में दोनों में से किसी का भी चयन अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार कर सकते हैं।
4. बी. ए. तृतीय वर्ष में पंचम एवं षष्ठ सेमेस्टर के पहले प्रश्नपत्र अनिवार्य होंगे तथा दूसरे प्रश्नपत्रों के लिए विकल्प की सुविधा दी गयी है। पंचम सेमेस्टर के दूसरे पत्र के लिए विद्यार्थी **'राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी काव्य'** अथवा **'भारतीय साहित्य'** में से किसी एक का चुनाव कर सकते हैं। इसी प्रकार षष्ठ सेमेस्टर के द्वितीय पत्र के रूप में **'लोक साहित्य'** अथवा **'अवधी–भोजपुरी साहित्य'** में से किसी का भी चयन अपनी इच्छानुसार कर सकते हैं।

सामान्य परिणाम (General Outcome)

- विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य एवं भाषा का आधारभूत ज्ञान प्राप्त होगा।
- साहित्य के मूलभूत स्वरूप, यथा विभिन्न विधाओं, हिन्दी के रोज़गारपरक स्वरूप आदि की जानकारी प्राप्त होगी।
- विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा अर्थात हिन्दी में रोजगार–कौशल प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों में राष्ट्रीयता तथा नैतिक चरित्र की भावना का विकास होगा।
- 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' तथा 'हिन्दी में रचनात्मक कौशल' जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को नए समय और समाज की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बनाने का प्रयास किया जाएगा।

पाठ्यक्रम–विशेषीकृत परिणाम (PROGRAMME SPECIFIC OUTCOMES)

- बी. ए. प्रथम वर्ष, प्रथम सेमेस्टर में **'हिन्दी काव्य'** प्रश्नपत्र के अंतर्गत हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के प्रतिनिधि कवियों की कविताओं के विषय में जानकारी देना तथा हिन्दी भाषा एवं साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में भारत में हिन्दी–पूर्व भाषा और साहित्य की परम्परा से विद्यार्थियों को अवगत कराना।
- बी. ए. प्रथम वर्ष, द्वितीय सेमेस्टर के अन्तर्गत **'हिन्दी साहित्य का इतिहास'** प्रश्नपत्र के माध्यम से विद्यार्थियों को एक हजार वर्ष से भी अधिक के हिन्दी साहित्य के इतिहास के बारे में ज्ञान कराना। प्रतियोगी परीक्षाओं की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विभिन्न कालखण्डों के नामकरण के आधार, उनकी परिस्थितियों विशेष में लिखे गये साहित्य, उस साहित्य के वर्गीकरण तथा उसकी प्रवृत्तियों के बारे में ज्ञान कराकर विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य को समझने की एक दृष्टि प्रदान करना।
- बी. ए. द्वितीय वर्ष, तृतीय सेमेस्टर के **'हिन्दी गद्य'** प्रश्नपत्र के अंतर्गत विद्याथियों को हिन्दी गद्य की महत्त्वपूर्ण विधाओं का सम्यक ज्ञान देना तथा उनमें हिन्दी की भिन्न–भिन्न गद्य विधाओं की चयनित प्रतिनिधि रचनाओं– नाटक, एकांकी, उपन्यास, कहानियाँ, निबंध आदि के अध्ययन के द्वारा साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना तथा आलोचकीय विवेक पैदा करना, ताकि विद्यार्थी इन सभी विधाओं से परिचित हो सकें और इस क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थी इनके लेखन के प्रति प्रेरित हो सकें।
- बी. ए. द्वितीय वर्ष, चतुर्थ सेमेस्टर के **'प्रयोजनमूलक हिन्दी'** प्रश्नपत्र के अंतर्गत विद्यार्थियों को राजभाषा के रूप में हिन्दी की संवैधानिक स्थिति से अवगत कराते हुए कार्यालय के कार्यों की मूलभूत जानकारी प्रदान करना ताकि वे कार्यालय के समस्त कार्यो को सुगमतापूर्वक करने में सक्षम हो सकें एवं उन्हें अनुवाद तथा कम्प्यूटर का मूलभूत ज्ञान देकर इन क्षेत्रों में रोज़गार की सम्भावनाओं से अवगत कराना।
- इसी प्रश्नपत्र के विकल्प के रूप में सम्मिलित **'हिन्दी में रचनात्मक कौशल'** प्रश्नपत्र के अन्तर्गत विद्यार्थियों को भाषिक सामर्थ्य, मंचीय कौशल, आलेख–रचना, व्यवहारिक लेखन, समाचार–लेखन, साक्षात्कार–कौशल, विज्ञापन–लेखन, पटकथा–लेखन जैसे कौशलों का ज्ञान कराते हुए उन्हें अधिक रोजगार–क्षम बनाना।
- बी. ए. तृतीय वर्ष, पंचम सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र **'साहित्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना'** के अंतर्गत विद्यार्थी को साहित्यशास्त्र एवं आलोचना के अर्थ, महत्व और विषय–क्षेत्र से परिचित कराना तथा उन्हें भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के आधुनिक विकास के विविध रूपों और दिशाओं का साक्षात्कार कराना। कतिपय प्रमुख हिन्दी आलोचकों के अध्ययन के माध्यम से हिन्दी आलोचना की स्थिति से भी उन्हें अवगत कराना।
- बी. ए. तृतीय वर्ष, पंचम सेमेस्टर सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र **'राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी–काव्य'** के अंतर्गत राष्ट्रीय चेतना को अभिव्यक्ति देने वाले कवियों की रचनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में राष्ट्र के प्रति अनुराग जाग्रत करना और उन्हें हिन्दी कविता की सामर्थ्य, हिन्दी कवियों की समय–सजगता, राष्ट्रीयता–बोध तथा उनकी कविताओं की प्रभावात्मकता के बारे में ज्ञान कराना।
- इसी पत्र के विकल्प रूप में रखे गये **'भारतीय साहित्य'** प्रश्नपत्र के द्वारा हिन्दी के विद्यार्थियों को भारत, भारतीयता और भारतीय साहित्य के स्वरूप एवं उनके बीच के पारस्परिक अन्तर्सम्बन्धों से अवगत कराते हुए भारतीय साहित्य की कुछ प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन करवाना, जिससे वे हिन्दीतर भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य और उसके माध्यम से विविधता में एकता की विशेषता रखने वाले भारतीय समाज, संस्कृति तथा

भारतवासियों में भारतीयता को पुष्ट करने वाली भावनाओं से परिचित हो सकें और उनमें भारतीयता का बोध और गहरा हो सके।

- बी. ए. तृतीय वर्ष, षष्ठ सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र **'भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि'** के अंतर्गत विद्यार्थियों को भाषा के अंगों, हिन्दी भाषा के उद्‌भव तथा विकास और देवनागरी लिपि के स्वरूप की जानकारी कराना।
- बी. ए. तृतीय वर्ष, षष्ठ सेमेस्टर के द्वितीय प्रश्नपत्र **'लोक साहित्य'** के अंतर्गत विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति में जनश्रुति से निर्मित साहित्य के महत्वपूर्ण योगदान से परिचित कराना तथा हिन्दी लोक साहित्य के विविध आयामों के साथ–साथ क्षेत्रीय बोलियों– अवधी अथवा भोजपुरी लोक साहित्य की प्रमुख विशेषताओं का ज्ञान कराना।
- इस प्रश्नपत्र के विकल्प रूप में सम्मिलित **'अवधी एवं भोजपुरी साहित्य'** के अन्तर्गत विद्यार्थियों को हिन्दी के साथ–साथ उसकी क्षेत्रीय उपभाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य से अवगत कराने के क्रम में उन्हें सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में प्रचलित अवधी और भोजपुरी के अधुनातन साहित्य से परिचित कराना जिससे वे इनके अद्यतन स्वरूप और स्थिति को जान सकें।

सहायक (माइनर पाठ्यक्रम) :

उत्तर प्रदेश शासन द्वारा दिनांक 20 अप्रैल, 2021 का भेजे गये पत्र संख्या–1065/सत्तर–3–2021–16(26/2011) के उपशीर्षक **'विषय चुनाव एवं प्रवेश प्रक्रिया'** के अन्तर्गत उल्लिखित बिन्दु संख्या 3 एवं 4 के अनुसार–

तत्पश्चात विद्यार्थी तीन मुख्य (मेजर) विषयों का चुनाव करेगा, जिनमें से दो मुख्य विषय उसके चुने हुए संकाय से लेना अनिवार्य होगा तथा तीसरा मुख्य विषय वह अपने संकाय अथवा दूसरे संकाय से ले सकता है।

उच्च शिक्षा अनुभाग–3, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ के दिनांक 13 जुलाई, 2021को जारी पत्र संख्या 1567/सत्तर–3–2021–16(26)/2011 टी.सी. में कहा गया है कि

तीसरे मुख्य विषय/सहायक चयनित विषय (Miner Elective Paper) का चयन छात्र द्वारा इस प्रकार किया जाएगा कि इनमें से कम से कम एक अनिवार्यतः अपने संकाय के अतिरिक्त अन्य संकाय (Other Faculty) से हो।

सभी विषय उपलब्ध संसाधनों के आधार पर अन्य संकाय के छात्रों के लिए माइनर इलेक्टिव पेपर (चार क्रेडिट का) तैयार कर सकते हैं। ऐसे माइनर इलेक्टिव कोर्स/पेपर का पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय की बोर्ड ऑफ स्टडीज विद्वत परिषद इत्यादि में नियमानुसार अनुमोदित कराया जाएगा। इस प्रकार के इलेक्टिव पेपर की कक्षाएं विश्वविद्यालय/महाविद्यालयों में अलग से होंगीं एवं परीक्षा विश्वविद्यालय द्वारा नियमानुसार आयोजित होगी।

- उक्त निर्देशों के अन्तर्गत यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है जो किसी अन्य संकाय/विषय के विद्यार्थी होंगे, परन्तु कला संकाय से हिन्दी को सहायक (माइनर) विषय के रूप में चुनेंगे।
- इस पाठ्यक्रम को बी. ए. के विद्यार्थियों को प्रथम दो वर्षों के चार सेमेस्टर हेतु तैयार किया गया है।
- हिन्दी विषय का माइनर इलेक्टिव के रूप में चयन करने वाले विद्यार्थियों को उक्त चार में से दो प्रश्नपत्र पढ़ने होंगे। प्रथम वर्ष के लिये निर्धारित प्रथम एवं द्वितीय सेमेस्टर के प्रश्नपत्रों में से विद्यार्थी किसी भी सेमेस्टर के एक माइनर पेपर का अध्ययन करेंगे। इसी तरह द्वितीय वर्ष के तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के प्रश्नपत्रों में से किसी एक का अध्ययन विद्यार्थियों को करना होगा।

इस प्रकार प्रथम एवं द्वितीय वर्ष में मात्र दो माइनर प्रश्नपत्रों का अध्ययन ही विद्यार्थियों को इन चार प्रश्नपत्रों में से करना होगा।

- इस पाठ्यक्रम को इस प्रकार से तैयार किया गया है कि विद्यार्थियों को साहित्य का आस्वाद भी प्राप्त हो सके और वे प्रतियोगी परीक्षाओं में आने वाले सामान्य हिन्दी के प्रश्नों की तैयारी भी कर सकें।
- हिन्दी का प्रत्येक माइनर प्रश्नपत्र चार केडिट का होगा जिसके लिये साठ कक्षाएँ निर्धारित होंगीं।

कार्यक्रम अनिवार्य	वर्ष	सेमेस्टर	सैद्धान्तिक / प्रयोगात्मक	अनिवार्य / चयनित	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE)	क्रेडिट	शिक्षण घण्टे	अन्य विभागों / संकायों के लिये चयनित
हिन्दी में सर्टिफिकेट (CERTIFICATE IN HINDI)	I	प्रथम	सैद्धान्तिक	अनिवार्य	हिन्दी काव्य	6	90	सभी विभागों / संकायों के लिये (ALL FACULTIES)
		द्वितीय	सैद्धान्तिक	अनिवार्य	हिन्दी साहित्य का इतिहास	6	90	सभी विभागों / संकायों के लिये
हिन्दी में डिप्लोमा (DIPLOMA IN HINDI)	II	तृतीय	सैद्धान्तिक	अनिवार्य	हिन्दी गद्य	6	90	सभी विभागों / संकायों के लिये
		चतुर्थ	सैद्धान्तिक	चयनित	प्रयोजनमूलक हिन्दी / हिन्दी में रचनात्मक कौशल	6	90	सभी विभागों / संकायों के लिये
हिन्दी में डिग्री (DEGREE IN HINDI)	III	पंचम (प्रथम प्रश्नपत्र)	सैद्धान्तिक	अनिवार्य	साहित्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना	5	75	सभी विभागों / संकायों के लिये
		पंचम (द्वितीय प्रश्नपत्र)	सैद्धान्तिक	चयनित	राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी–काव्य / भारतीय साहित्य	5	75	सभी विभागों / संकायों के लिये
		षष्ठ (प्रथम प्रश्नपत्र)	सैद्धान्तिक	अनिवार्य	भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि	5	75	सभी विभागों / संकायों के लिये
		षष्ठ (द्वितीय प्रश्नपत्र)	सैद्धान्तिक	चयनित	लोक साहित्य / अवधी–भोजपुरी साहित्य	5	75	सभी विभागों / संकायों के लिये

कार्यक्रम/कक्षा : सर्टिफिकेट	बी. ए. प्रथम वर्ष	सेमेस्टर : I
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010101T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी काव्य**	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

हिन्दी भाषा और साहित्य की पृष्ठभूमि के रूप में भारत में अति प्राचीनकाल से चली आ रही साहित्य–लेखन की परम्परा से विद्यार्थियों को अवगत कराना तथा हिन्दी साहित्य के विभिन्न कालों के प्रतिनिधि कवियों की कविताओं का रसास्वादन कराकर हिन्दी कविता की विशेषताओं और सामर्थ्य से उन्हें परिचित कराना।

क्रेडिट : **6**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **90**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**साहित्य की भारतीय परंपरा और हिन्दी भाषा तथा साहित्य :** हिन्दी भाषा की पृष्ठभूमि– संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश; साहित्य–लेखन की भारतीय परंपरा और हिन्दी साहित्य; हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाएँ; हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि; हिन्दी साहित्य का काल–विभाजन और नामकरण।	12
II	**आदिकालीन कवि :** **क. गोरखनाथ :** (गोरखबानी; संपादक–पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल) सबदी संख्या– 2,4,7,8,16 तथा पद राग रामश्री– 10,11। आलोचना के बिन्दु– भारतीय समाज–संस्कृति को गोरखनाथ की देन, गोरखनाथ की कविता। **ख. अमीर खुसरो :** (अमीर खुसरो : व्यक्तित्व और कृतित्त्व– डॉ. परमानन्द पांचाल) कव्वाली–घ (1), गीत–ड़ (4), दोहे– च (पृ. 86), 05 दोहे– गोरी सोवे, खुसरो रैन, देख मैं, चकवा चकवी, सेज सूनी। **आलोचना के बिन्दु**– अमीर खुसरो का साहित्यिक परिचय; अमीर खुसरो का काव्यगत–वैशिष्ट्य।	12
III	**भक्तिकालीन निर्गुण कवि :** **क. कबीरदास** (कबीरदास; संपादक– श्यामसुंदर दास) गुरुदेव को अंग– 01,06,11,17,20 तथा विरह को अंग–04,10,12,20,33। **आलोचना के बिन्दु**– कबीर की भक्ति, कबीर का समाज–दर्शन। **ख. मलिक मुहम्मद जायसी**– पद्मावत (मलिक मुहम्मद जायसी; संपादक– आ. रामचन्द्र शुक्ल) मानसरोदक खंड; दोहा–चौपाई संख्या 01 से 06 तक। **आलोचना के बिन्दु**– जायसी का काव्य–सौष्ठव; पद्मावत की प्रेम–व्यंजना; पठित काव्यांश का प्रतिपाद्य।	10
IV	**भक्तिकालीन सगुण कवि :** **क. सूरदास** (भ्रमरगीत सार; संपादक– आ. रामचन्द्र शुक्ल) पद संख्या– 07,21,23,24,26। **आलोचना के बिन्दु**– सूर की भक्ति, सूरदास का विरह–वर्णन। **ख. तुलसीदास** : श्रीरामचरितमानस; गीता प्रेस, गोरखपुर अयोध्याकाण्ड; दोहा संख्या– 28 से 41। **आलोचना के बिन्दु**– तुलसी का समन्वयवाद, भक्ति–भावना, काव्यगत विशेषताएँ।	12
V	**रीतिकालीन कवि :** **क. बिहारीलाल** (बिहारी रत्नाकर; संपादक– जगन्नाथदास रत्नाकर) दोहा संख्या– 1,2,5,6,7,15,19,20,21,25,32,38। **आलोचना के बिन्दु**– बिहारी : रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि, बिहारी की कविताओं में गागर में सागर। **ख. घनानन्द** (घनानन्द कवित्त; संपादक– विश्वनाथ प्रसाद मिश्र)	11

	छंद संख्या– 1 से 7 तक। आलोचना के बिन्दु– रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानन्द; घनानन्द का प्रेम–वर्णन।	
VI	आधुनिककालीन कवि : क. अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध : कर्मवीर, जन्मभूमि। आलोचना के बिन्दु– हरिऔध की काव्यगत विशेषताएँ; पठित कविताओं का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य। ख. मैथिलीशरण गुप्त : भारत भारती (शिक्षा की अवस्था)। आलोचना के बिन्दु– काव्यगत विशेषताएँ, राष्ट्रीय चेतना।	10
VII	छायावादी कवि : क. जयशंकर प्रसाद : बीती विभावरी जाग री; पेशोला की प्रतिध्वनि। आलोचना : जयशंकर प्रसाद और छायावाद; जयशंकर प्रसाद का काव्य–वैभव। ख. सुमित्रानन्दन पंत : मौन निमंत्रण, नौका विहार। आलोचना के बिन्दु– छायावाद तथा सुमित्रानन्दन पंत, पंत का प्रकृति–चित्रण, पठित कविताओं का प्रतिपाद्य और समीक्षा।	12
VIII	प्रगतिवादी–प्रयोगवादी कवि : क. मुक्तिबोध : विचार आते हैं; मुझे हर कदम पर चौराहे मिलते हैं। आलोचना के बिन्दु– मुक्तिबोध की काव्य–संवेदना, आधुनिक कवियों में मुक्तिबोध का स्थान। ख. अज्ञेय : यह दीप अकेला, कलगी बाजरे की। आलोचना के बिन्दु– प्रयोगवाद और अज्ञेय, अज्ञेय की काव्यगत विशेषताएँ; पठित कविताओं का प्रतिपाद्य और वैशिष्ट्य।	11

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। इकाई II से VIII तक कुल मिलाकर 6 व्याख्याएँ पूछी जायेंगीं जिनमें से कोई तीन व्याख्याएँ विद्यार्थियों को करनी होंगीं। एक इकाई से एक से अधिक व्याख्यांश नहीं दिया जायेगा। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित हैं। इस तरह प्रश्नपत्र–निर्माण हेतु आलोचनात्मक प्रश्नों के लिये 12X4=48 तथा व्याख्याओं के लिये 9X3=27 अंक निर्धारित हैं।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।

अध्ययन के लिये सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. उदयराज सिंह, नाथ पंथ और गोरखबानी, आर्यावर्त संस्कृति संस्थान, दिल्ली, 2010
2. रामकुमार वर्मा, संत कबीर, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद, 1943
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, मुम्बई, 1946
4. रामकुमार वर्मा, कबीर का रहस्यवाद, साहित्य भवन, इलाहाबाद, 1941
5. रामलाल वर्मा, जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1979
6. मुंशीलाल पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद
7. मुंशीलाल शर्मा, सूरदास और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
8. किशोरीलाल, सूर और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
9. नन्ददुलारे वाजपेयी, सूर संदर्भ, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग
10. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937
11. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953

12. किशोरीलाल, घनानन्द : काव्य और आलोचना, साहित्य भवन, इलाहाबाद
13. गिरिश, गिरिजदत्त शुक्ल, महाकवि हरिऔध, अरुणोदय पब्लिशिंग हाउस, प्रयाग, सन 1932
14. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन 2008
15. राजेन्द्र सिंह गौड़, आधुनिक कवियों की काव्य साधना, श्रीराम मेहता एंड संस, आगरा, 1953
16. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
17. शम्भूनाथ सिंह, छायावाद युग, सरस्वती मन्दिर प्रकाशन, वाराणसी 1962
18. नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
19. डॉ. नगेन्द्र, सुमित्रानंदन पन्त, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, 1962
20. रमेश शर्मा, पन्त की काव्य साधना, साहित्य निकेतन, कानपुर
21. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिन्दी कविता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
22. रामस्वरूप चतुर्वेदी, अज्ञेय का रचना संसार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
23. नंदकिशोर नवल, मुक्तिबोध, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली
24. डॉ. हंसराज त्रिपाठी, आत्मसंघर्ष की कविता और मुक्तिबोध, मानस प्रकाशन, प्रतापगढ़
25. अज्ञेय, दूसरा सप्तक, प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रतीक प्रकाशन माला, 1951

कार्यक्रम/कक्षा : सर्टिफिकेट	बी. ए. प्रथम वर्ष	सेमेस्टर : II
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010201T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : हिन्दी साहित्य का इतिहास	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य के इतिहास की जानकारी प्रदान करने के लिये तैयार किया गया है। किसी विषय के सम्यक् बोध के लिये उसके इतिहास का अध्ययन बड़ा सहायक होता है। अतः इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी विभिन्न कालखण्डों की विभिन्न परिस्थितियों में लिखे गये हिन्दी साहित्य के विकास–क्रम से अवगत हो सकेंगे और युग–विशेष में रचित साहित्य तथा उसकी प्रवृत्तियों को भी समझ सकेंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की दृष्टि से भी यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों को विशेष सहायक होगा।

क्रेडिट : 6	पूर्णांक : 25+75 =100	उत्तीर्णांक : 10+30=40

कुल व्याख्यान संख्या-**90**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**आदिकाल :** आदिकाल का नामकरण तथा सीमांकन; आदिकाल की परिस्थितियाँ; आदिकाल का साहित्य (जैन साहित्य, सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य, रासो साहित्य तथा लौकिक साहित्य) आदिकालीन साहित्य की प्रवृत्तियाँ।	12
II	**भक्तिकाल :** भक्तिकाल के उदय की पृष्ठभूमि एवं परिस्थितियाँ; भक्तिकालीन साहित्य का वर्गीकरण; निर्गुण–सगुण काव्यधाराओं (ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, कृष्णाश्रयी तथा रामाश्रयी) का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ। भक्ति–साहित्य और लोक–जागरण।	12
III	**रीतिकाल :** रीतिकाल की पृष्ठभूमि एवं नामकरण; रीतिकालीन प्रमुख काव्यधाराओं– रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध तथा रीतिमुक्त का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ; भूषण एवं वीररसात्मक कविता।	10
IV	**आधुनिक काल :** आधुनिकता से अभिप्राय; आधुनिक काल की पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ; हिन्दी नवजागरण एवं भारतेन्दु युग; भारतेन्दुयुगीन साहित्य की बहुआयामिता एवं विशेषताएँ; हिन्दी भाषा एवं साहित्य को आ. महावीर प्रसाद विवेदी का योगदान; द्विवेदीयुगीन साहित्य का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ।	11
V	**छायावाद :** छायावाद की पृष्ठभूमि; नामकरण एवं साहित्य; नवजागरण एवं छायावाद; प्रवृत्तियाँ एवं अवदान; छायावादी काव्यभाषा।	10
VI	**छायावादोत्तर काव्य :** राष्ट्रीय–सांस्कृतिक काव्यधारा का परिचय एवं प्रवृत्तियाँ; प्रगतिवाद : नामकरण, परिचय एवं प्रवृत्तियाँ; प्रयोगवाद : अभिप्राय एवं विशेषताएँ; नयी कविता : परिचय तथा प्रवृत्तियाँ; समकालीन कविता का वैविध्य एवं विशेषताएँ।	12
VII	**हिन्दी गद्य का विकास :** नाटक, कहानी, उपन्यास, एकांकी, निबंध, जीवनी, संस्मरण तथा आत्मकथा का उद्भव और विकास। हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।	12
VIII	**हिन्दी साहित्य में शोध :** शोध का अर्थ और क्षेत्र, शोध के प्रकार, शोधार्थी की योग्यता (अर्हता), हिन्दी में शोध की स्थिति, हिन्दी भाषा और साहित्य में शोध की संभावनाएँ।	11

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।

2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 5–5 अंकों की एक–एक टिप्पणी भी पूछी जायेगी। इनमें से कोई चार टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। इकाई VIII को छोड़कर अन्य सभी इकाइयों से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 7 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। इस तरह 12X4=48 तथा 5X4=20 तथा 1X7=07 के अनुसार इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि 20–20 अंकों के लिये विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और 20 ही अंकों के लिये एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।

सहायक ग्रन्थः

1. डॉ. नगेन्द्र, (संपा.), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976
2. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
3. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
4. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
6. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, 1961, तृतीय संस्करण
8. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय, मुम्बई, 1940
9. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा; शोध प्रविधि; हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला।
10. विनयमोहन शर्मा; शोध प्रविधि; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 2018।
11. एस. एन. गणेशन; अनुसन्धान प्रविधि : सिद्धान्त और प्रक्रिया; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

कार्यक्रम/कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर : III
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010301T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी गद्य**	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस प्रश्नपत्र का विषय–क्षेत्र हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का सम्यक ज्ञान देना तथा उन्हें हिन्दी की कुछ प्रतिनिधि गद्य रचनाओं का अध्ययन करवाना है। इससे हिन्दी गद्य के अध्ययन, लेखन तथा आलोचना के प्रति उनकी रुचि विकसित होगी। गद्य साहित्य के पठन–पाठन की समुचित रीति को समझकर उनमें आलोचकीय विवेक उत्पन्न होगा और रचनाओं में अन्तर्निहित जीवन–मूल्यों से जुड़कर वे हिन्दी साहित्य की महत्ता को समझ सकेंगे। लेखन के क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों को इस पत्र से विशेष लाभ प्राप्त होगा।

क्रेडिट : **6**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **90**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**हिन्दी गद्य का विकास :** भारत में गद्य–लेखन की परंपरा; हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि एवं विकास (आदिकाल, भक्तिकाल एवं रीतिकाल के संदर्भ में); आधुनिक काल में हिन्दी का प्रारम्भिक गद्य; आधुनिककालीन परिस्थितियों का हिन्दी गद्य के विकास में योगदान; हिन्दी गद्य के प्रारम्भिक उन्नयन में प्रमुख व्यक्तियों एवं संस्थाओं की भूमिका; 19वीं सदी में हिन्दी गद्य–लेखन के विविध आयाम; हिन्दी गद्य के विकास में पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका।	12
II	**हिन्दी नाटक एवं एकांकी :** **नाटक : ध्रुवस्वामिनी– जयशंकर प्रसाद** **आलोचना के बिन्दु :** जयशंकर प्रसाद की नाट्यकला; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'ध्रुवस्वामिनी' की समीक्षा; 'ध्रुवस्वामिनी' में इतिहास, कल्पना और आधुनिक संवेदना; 'ध्रुवस्वामिनी' का चरित्र–चित्रण। **एकांकी : औरंगजेब की आखिरी रात– रामकुमार वर्मा** **आलोचना के बिन्दु :** एकांकी के तत्वों के आधार पर 'औरंगजेब की आखिरी रात' एकांकी की समीक्षा, एकांकी का प्रतिपाद्य।	12
III	**हिन्दी उपन्यास :** **गबन– प्रेमचंद** **आलोचना के बिन्दु :** प्रेमचंद की उपन्यास–कला; उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर 'गबन' की समीक्षा; 'गबन' के नायक–नायिका का चारित्रिक वैशिष्ट्य; 'गबन' उपन्यास का उद्देश्य और प्रासंगिकता।	12
IV	**हिन्दी कहानी–1 :** आकाशदीप– जयशंकर प्रसाद हार की जीत– सुदर्शन **आलोचना के बिन्दु :** कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'आकाशदीप' तथा 'हार की जीत' कहानियों की समीक्षा। पठित कहानियों के कथानक का सार तथा विशेषताएँ। जयशंकर प्रसाद तथा सुदर्शन की कहानी–कला की विशेषताएँ।	10
V	**हिन्दी कहानी–1 :** लाल पान की बेगम– फणीश्वरनाथ रेणु पिता– ज्ञानरंजन **आलोचना के बिन्दु :** कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'लाल पान की बेगम' तथा 'पिता' कहानियों की समीक्षा। पठित कहानियों के कथानक का सार तथा विशेषताएँ। फणीश्वरनाथ रेणु एवं ज्ञानरंजन की कहानी–कला की विशेषताएँ।	10
VI	**निबंध–1 :** मजदूरी और प्रेम– सरदार पूर्णसिंह	11

	करुणा– रामचन्द्र शुक्ल पठित निबंधों की आलोचना के बिन्दु : 'मजदूरी और प्रेम' निबंध का प्रतिपाद्य तथा समीक्षा; हिन्दी निबंध और आ. रामचन्द्र शुक्ल; 'करुणा' निबंध का प्रतिपाद्य।	
VII	निबंध–2 : देवदारु– हजारीप्रसाद द्विवेदी मेरे राम का मुकुट भीग रहा है– विद्यानिवास मिश्र पठित निबंधों की आलोचना : ललित निबंधकार के रूप में आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी का स्थान; 'देवदारु' की समीक्षा, विद्यानिवास मिश्र की निबंध–शैली की विशेषताएँ; 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' का सारांश और समीक्षा।	11
VIII	हिन्दी की नवीन गद्य विधाएँ : जीवनी, आत्मकथा, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, यात्रा–वृतांत, डायरी, व्यंग्य, पत्र–साहित्य, संस्मरण तथा साक्षात्कार विधाओं का स्वरूपगत परिचय।	12

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। इकाई I अथवा VIII में से किसी एक प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य होगा। इकाई II से VII तक प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इनमें से कोई तीन व्याख्याएँ विद्यार्थियों को करनी होंगीं। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित हैं। इस तरह 12X4=48 तथा 9X3=27 में इस प्रश्नपत्र के अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।

सहायक ग्रन्थ :

1. रामचंद्र तिवारी, हिंदी निबंध और निबंधकार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007।
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992।
4. रामचंद्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
5. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018।
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, गद्य विन्यास और विकास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2018।
7. के. सत्यनारायण (संपा.) दृश्य सप्तक, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, प्रथम संस्करण, सन 1975।
8. सोमनाथ गुप्ता, हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास, इंद्रा चंद्र नारंग, इलाहाबाद तीसरा संस्करण, 1951।
9. डॉ. दशरथ ओझा, हिंदी नाटक : उद्‌भव एवं विकास, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
10. गिरीश रस्तोगी, हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष, लोकभारती, इलाहाबाद।
11. सत्यवती त्रिपाठी, आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
12. सिद्धनाथ कुमार, हिंदी एकांकी की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
13. डॉ. रामचरण महेंद्र, हिन्दी एकांकी और एकांकीकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

कार्यक्रम/कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर : IV
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010401**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **प्रयोजनमूलक हिन्दी**	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को बहुप्रयोजनीय हिन्दी का ज्ञान कराना है और उन्हें विभिन्न व्यवहारों के योग्य हिन्दी में दक्ष बनाना है। राजभाषा के रूप में देश–विदेश में हिन्दी की स्थिति और कार्यालयी कार्यों में उसके प्रयोग को समझने से लेकर अनेक प्रयोजनों हेतु उसमें लेखन–कौशल का विकास वे अपने भीतर कर सकेंगे। वर्तमान समय में अनुवाद तथा कम्प्यूटर की महत्ता, उपयोगिता तथा कार्य–कौशल की मूलभूत जानकारी भी वे प्राप्त कर सकेंगे जो उन्हें रोजगार–क्षम बनाने में सहायक होगी।

क्रेडिट : **6**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **90**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**राजभाषा के रूप में हिन्दी की स्थिति :** राजभाषा, राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा तथा मानक भाषा; राजभाषा के रूप में हिंदी की भूमिका एवं दायित्व; राजभाषा के रूप में हिन्दी के समक्ष खड़ी चुनौतियाँ और समाधान। राजभाषा हिन्दी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।	11
II	**हिन्दी की संवैधानिक स्थिति :** अनुच्छेद 343 से 351 तक तथा अनुच्छेद 120 और 210। राष्ट्रपति के आदेश–सन 1952, 1955 एवं 1960। राजभाषा अधिनियम–1963 यथा–संशोधित 1967। राजभाषा नियम 1976 यथा–संशोधित 1987।	12
III	**प्रयोजनमूलक हिन्दी का स्वरूप, उद्देश्य एवं क्षेत्र :** प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पना, उद्देश्य एवं क्षेत्र; कार्यालयी कार्यकलाप की सामान्य जानकारी; प्रयोजनमूलक हिन्दी में रोजगार की संभावनाएँ।	12
IV	**कार्यालयी पत्राचार :** सरकारी पत्र; अर्द्धसरकारी पत्र; कार्यालय आदेश; परिपत्र; अधिसूचना; ज्ञापन; निविदा; संकल्प; प्रेस–विज्ञप्ति।	10
V	**कार्यालयी हिन्दी में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली :** इस इकाई में कार्यालयों एवं अधिकारियों के नाम, पदनाम, संबोधन आदि तथा प्रशासनिक एवं विधिक शब्दावली से सम्बन्धित सौ शब्दों की सूची दी जायेगी। उसी में से 12 शब्द विद्यार्थियों से परीक्षा में पूछे जायेंगे।	10
VI	**प्रारूपण, टिप्पण, सक्षंपेण, पल्लवन एवं प्रतिवेदन :** प्रारूपण का अर्थ और क्षेत्र, प्रारूपण–लेखन की पद्धति। टिप्पण का परिचय तथा उपयोगिता, टिप्पण–लेखन की पद्धति, टिप्पण और टिप्पणी में अन्तर। संक्षेपण का अर्थ एवं उपयोग, संक्षेपण की पद्धति। पल्लवन का सामान्य परिचय, पल्लवन के सिद्धान्त, पल्लवन और निबंध–लेखन में अंतर। प्रतिवेदन का अर्थ एवं उपयोग, प्रतिवेदन के प्रकार एवं लेखन–विधि।	12
VII	**अनुवाद– अवधारणा और स्वरूप :** अनुवाद का महत्त्व; अनुवाद के प्रकार; अनुवाद के क्षेत्र; अनुवाद के उपकरण; अनुवादक के गुण।	11
VIII	**हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय और उपयोगिता; कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने की सुविधाएँ एवं समस्याएँ; हिन्दी में पीपीटी स्लाइड एवं पोस्टर–निर्माण। इन्टरनेट और हिन्दी; हिन्दी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर एवं वेबसाइटें; सरकारी तथा गैरसरकारी चैनल (ज्ञानदर्शन, ई–पाठशाला, स्वयं, मूक्स आदि)।	12

पारिभाषिक शब्दों की सूची

1. Abandonment	- परित्याग
2. Ability	-योग्यता
3. Abolition	-उन्मूलन ,अंत
4. Abridge	-संक्षेप करना ,न्यून करना
5. Absence	-अनुपस्थिति
6. Absolve	-विमुक्त करना
7. Absorb	-अवशोषण करना ,समाहित करना
8. Abstract	-सार
9. Absurdity	-अर्थहीनता ,बेतुकापन
10. Academic	-शैक्षणिक
11. Academy	-अकादमी
12. Acceptance	-स्वीकार
13. Account	-लेखा ,खाता
14. Accurate	-यथार्थ, सटीक
15. Accuse	-अभियोग लगाना
16. Adjustment	-समायोजन
17. Adjuster	-समायोजक
18. Administrative	-प्रशासकीय
19. Admonition	-भर्त्सना
20. Affidavit	-शपथनामा
21. Affiliate	-सम्बद्ध करना
22. Allotment	-आवंटन
23. Ambassador	-राजदूत
24. Bench	-न्यायपीठ
25. Bribe	-घूस, रिश्वत
26. Broadcast	-प्रसारण
27. Cabinet	-मंत्रिमंडल
28. Capital	-पूँजी
29. Catalogue	-ग्रंथसूची
30. Caution	-सावधान
31. Cell	-प्रकोष्ठ /कक्ष
32. Censure Motion -	निन्दा प्रस्ताव
33. Circle	-इलाका / अंचल
34. Claim	-दावा
35. Claimant	-दावेदार
36. Clause	-खंड
37. Collusion	-दुरभिसंधि
38. Commemoration	-स्मारक
39. Commencement	-प्रारंभ
40. Comment	-टीका ,टिप्पणी
41. Concession	-रियायत
42. Confidential	-गोपनीय
43. Confirmation	-पुष्टि करना
44. Contribution	-अंशदान
45. Corrigendum	-शुद्धिपत्र
46. Controversial	-विवादास्पद
47. Corroborate	-संपुष्टि करना
48. Credibility	-विश्वसनीयता
49. Defamation	-मानहानि
50. Defence	-रक्षा

51. Defendant	-प्रतिवादी
52. Deficiency	-कमी
53. Denial	-अस्वीकार
54. Department	-विभाग
55. Deposit	-निक्षेप / जमा
56. Deputy	-उप
57. Detective	-गुप्तचर /जासूस
58. Dignitary	-उच्चपदधारी / उच्चपदस्थ
59. Discrepancy	-विसंगति
60. Dismiss	-पदच्युत करना
61. Disobey	-अवज्ञा करना / आज्ञा न मानना
62. Disposal	-निपटान / निवतन
63. Disqualify	-अनर्ह करना / अनर्ह होना
64. Disregard	-अवहेलना
65. Ditto	-यथोपरि / जैसे ऊपर
66. Duration	-अवधि
67. Draft	-प्रारूप /मसौदा
68. Earmark	- चिह्न करना
69. Eligible	-पात्र, अर्ह
70. Embassy	-राजदूतावास
71. Emblem	-प्रतीक / चिह्न
72. Enrolment	-नामांकन
73. Ensure	-आश्वस्त करना
74. Entitle	-हकदार होना
75. Faculty	-संकाय
76. Institute	-संस्थान
77. Extensive	-व्यापक / विस्तृत
78. Financial	-वित्तीय
79. Forward	-अग्रेषित करना
80. Judgement	-निर्णय
81. Legislative	-विधान मंडल
82. Leisure	-अवकाश
83. Lien	-पुनर्ग्रहणाधिकार
84. Literacy	-साक्षरता
85. Misconduct	-अनाचार / कदाचार
86. Monopoly	-एकाधिकार
87. Nominee	-नामिती /नामित / मनोनीत व्यक्ति
88. Non-acceptance	-अस्वीकृति
89. Oath	-शपथ
90. Observance	-पालन
91. Prohibited	-निषिद्ध
92. Project	-परियोजना
93. Promotion	-प्रोन्नति
94. Prospectus	-विवरण-पत्रिका
95. Provisional	-अस्थायी
96. Provision	-उपबंध / शर्त ,व्यवस्था
97. Recommended	-संस्तुत
98. Relaxation	-छूट / रियायत/ढील
99. Unavoidable	-अनिवार्य /अपरिहार्य
100. Valid	-विधिमान्य

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। इकाई V को छोड़कर सभी इकाइयों से 5–5 अंकों की कुल 7 टिप्पणियाँ पूछी जायेगी। इनमें से कोई चार टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। इकाई V को छोड़कर सभी इकाइयों से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 7 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। इस तरह 12X4=48 तथा 5X4=20 तथा 1X7=07 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।

सहायक ग्रन्थः

1. रामचंद्र सिंह सागर, कार्यालय कार्य विधि, आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली, 1963
2. चंद्रपाल शर्मा, कार्यालयीन हिन्दी की प्रकृति, समता प्रकाशन, दिल्ली, 1991
3. प्रज्ञा पाठशाला, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
4. डॉ. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
5. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
6. डॉ. माधव सोनटके, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रयुक्ति और अनुवाद, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
7. कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रक्रिया और स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005
8. डॉ,. संजीव कुमार जैन, प्रयोगजनमूलक कामकाजी हिन्दी एवं कम्प्यूटिंग, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
9. संतोष गोयल, हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर; श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
10. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. हरिमोहन, कम्प्यूटर और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
12. भोलानाथ तिवारी, अनुवाद विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली, 1972
13. पूरनचंद टंडन, भाषा दक्षता (भाग 01 से 04), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2018
14. कुसुम अग्रवाल, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली, 1999
15. 17. http:shabdavali.rbi.org.in/ (बैकिंग शब्दावली)
16. http:rajbhasha.gov.in/hi/hindi-vocabulary (विभिन्न पारिभाषिक शब्दकोश)
18. http://www.collinsdictionary.com/hi/dictionary/english-hindi (अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश)

कार्यक्रम/कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर : **IV**
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010401T (O)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी में रचनात्मक कौशल**	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

सामाजिक, व्यवसायिक, कार्यालयी तथा शैक्षणिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के भाषा–कौशल में निखार लाना। विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षाओं एवं साक्षात्कार हेतु आत्मविश्वास उत्पन्न करना। विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल विकसित करना। भाषा–ज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख शिक्षा प्रदान करना।

केडिट : **06**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **90**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**भाषा–सामर्थ्य :** सामान्य एवं तकनीकी शब्द, सुनना और बोलना– प्रभावी श्रवण के आयाम, शुद्ध उच्चारण, वार्तालाप–कुशलता; स्वाध्याय और उद्देश्यकेन्द्रित पाठन, सामान्य लेखन और रचनात्मक लेखन। हिन्दी में रोजगार की संभावनाएँ।	12
II	**मंचीय कौशल :** भाषण, स्वागत–भाषण, विषय–प्रवर्तन, अध्यक्षीय वक्तव्य, मंच–संचालन तथा धन्यवाद–ज्ञापन।	10
III	**आलेख–रचना :** सभा–संगोष्ठियों हेतु शोध–पत्र तैयार करना; पत्र–पत्रिकाओं के लिये आलेख रचना (लेख, शोधालेख, समीक्षा, पत्र–लेखन, स्तम्भ–लेखन आदि); डाइरी–लेखन की महत्ता एवं विधि; आकाशवाणी एवं दूरदर्शन हेतु वार्ता, साक्षात्कार एवं परिचर्चा तैयार करने की विधियाँ।	12
IV	**व्यवहारिक लेखन :** सूचना; संदेश; कार्यवृत्त; कार्यसूची; प्रतिवेदन; आत्मविवरण; आवेदन–पत्र तथा ई–मेल लेखन।	12
V	**समाचार–लेखन :** समाचार : परिभाषा और स्वरूप; समाचार के माध्यम; समाचार–लेखन; समाचार–सम्पादन; समाचार–प्रस्तुति; समाचार के विभिन्न स्रोत; समाचार–संकलन तथा प्रेषण; समाचार–एजेंसियाँ ।	11
VI	**साक्षात्कार–कौशल :** साक्षात्कार का अर्थ, महत्व एवं विशेषताएँ; साक्षात्कार के प्रकार; साक्षात्कारकर्ता की योग्यता एवं गुण, साक्षात्कार हेतु की जाने वाली तैयारी तथा साधन; मीडिया में साक्षात्कार की विशेषताएँ। नौकरी हेतु साक्षात्कार की तैयारी।	12
VII	**विज्ञापन–लेखन :** विज्ञापन : अर्थ व परिभाषा, विज्ञापन का महत्व, विज्ञापन के विविध माध्यम तथा विज्ञापन की भाषा का स्वरूप।	10
VIII	**पटकथा–लेखन :** पटकथा का अर्थ और परिभाषा, कथा और पटकथा का अन्तर, पटकथा–लेखन के क्षेत्र, पटकथा से संवाद का संबंध और संवाद–लेखन। पटकथा के फिल्मांकन की तकनीक।	11

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 5–5 अंकों की कुल 8 टिप्पणियाँ पूछी जायेंगीं। इनमें से कोई चार टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 7 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। एक इकाई से एक से अधिक प्रश्न नहीं पूछा जायेगा। इस तरह 12X4=48 तथा 5X4=20 तथा 1X7=07 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि एक–दो महीने कक्षाएँ चल जाने के पश्चात् विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।
4. पाठ्यक्रम कोड में कोष्ठक में दिये गये (O) का अभिप्राय विकल्प (Option) से है। इसका तात्पर्य यह है कि इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी यदि चाहें तो **प्रयोजनमूलक हिन्दी** के स्थान पर **हिन्दी में रचनात्मक कौशल** का चयन भी कर सकते हैं।

अध्ययन के लिये प्रस्तावित सहायक ग्रन्थ :

1. देवेन्द्रनाथ शर्मा; राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान;लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. शैलेन्द्र सेंगर; मीडिया लेखन और सम्पादन; आविष्कार प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ; संचार माध्यम : तकनीक और लेखन; श्याम प्रकाशन, जयपुर।
4. गोपीनाथ श्रीवास्तव; सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. असगर वजाहत/प्रेमरंजन; टेलीविजन लेखन;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो वार्ता शिल्प;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो नाटक की कला;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. रमेश गौतम; रचनात्मक लेखन;भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।

कार्यक्रम/कक्षा : डिग्री	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर : V
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010501T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : साहित्यशास्त्र और हिन्दी आलोचना	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

साहित्य को सम्यक् रूप से समझकर उसका रसास्वादन करने अथवा उसकी समीक्षा करने में सक्षम होने के लिये साहित्यशास्त्र का ज्ञान अत्यावश्यक है। इस पाठयक्रम के अध्ययन से विद्यार्थी न केवल भारतीय और पाश्चात्य साहित्यशास्त्र की प्रमुख सैद्धान्तिकी को समझ सकेंगे अपितु हिन्दी के कतिपय प्रमुख आलोचकों तथा उनकी आलोचना–पद्धतियों को जानकर आलोचकीय विवेक भी अपने भीतर पैदा कर सकेगे। हिन्दी आलोचना के विकास तथा उसकी प्रमुख पद्धतियों से भी वे अवगत हो सकेगे।

क्रेडिट : **05**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **75**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**काव्य का स्वरूप :** काव्य–लक्षण; काव्य–प्रयोजन; काव्य–हेतु।	9
II	**काव्य–वैशिष्ट्य :** काव्यरूप; काव्यगुण; काव्यदोष; शब्दशक्तियाँ– अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना।	9
III	**काव्य के सिद्धांत–1 :** रस, ध्वनि तथा अलंकार सिद्धांतों का परिचय।	10
IV	**काव्य के सिद्धांत–2 :** रीति, सिद्धांत, वक्रोक्ति सिद्धांत तथा औचित्य सिद्धांत का परिचय।	10
V	**पाश्चात्य काव्यशास्त्र :** प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धांत लोंजाइनस का औदात्य सिद्धान्त आई. ए. रिचर्ड्स का मूल्य और संप्रेषण का सिद्धांत टी. एस. इलियट का निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत	9
VI	**पाश्चात्य समीक्षा की प्रमुख मान्यताएँ :** यथार्थवाद, अस्तित्ववाद, उत्तर–आधुनिकतावाद। प्रतीक, बिम्ब, कल्पना और फैंटेसी का परिचय।	9
VII	**हिन्दी आलोचना :** हिन्दी आलोचना का विकास। हिन्दी आलोचना की विविध पद्धतियाँ– सैद्धान्तिक, व्यवहारिक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक।	10
VIII	**हिन्दी आलोचक :** निम्नलिखित आलोचकों एवं उनके आलोचना–कर्म के वैशिष्ट्य का परिचय– क. आ. रामचन्द्र शुक्ल ख. डॉ. नन्ददुलारे बाजपेयी ग. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी घ. डॉ. रामविलास शर्मा	9

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 5–5 अंकों की कुल 8 टिप्पणियाँ पूछी जायेगी। इनमें से कोई चार टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। पूरे पाठ्यक्रम से से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 7 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। इस तरह 12X4=48 तथा 5X4=20 तथा 1X7=07 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में

उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।

सहायक ग्रन्थ :

1. देवेन्द्रनाथ शर्मा, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2002
2. नंदकिशोर नवल, हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
3. बच्चन सिंह, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1987
4. भगीरथ मिश्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988
5. भगीरथ मिश्र काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
6. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
7. डॉ. रामचन्द तिवारी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 2010
8. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1990

कार्यक्रम/कक्षा : डिग्री	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर : V
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010502T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी–काव्य	

पाठ्यक्रम परिणाम **(Course outcomes) :**

साहित्य हमें हमारे जीवन–मूल्यों से जोड़ता है। राष्ट्रीयता एक बड़ा जीवन–मूल्य है। हिन्दी कविता प्राचीन काल से ही इससे जुड़ी रही है। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न कालों के ऐसे हिन्दी कवियों और उनके इस तरह के काव्य से परिचित कराना है जो राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हैं। इस तरह की कविताओं के अध्ययन से उनमें निश्चय ही राष्ट्रीयता की भावना और भी पुष्ट तथा प्रगाढ़ हो सकेगी और उनमें राष्ट्र के प्रति अनुराग जाग्रत होगा।

क्रेडिट : **05**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **75**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**सैद्धान्तिकी :** राष्ट्रीय चेतना : अवधारणा और स्वरूप; राष्ट्रीय चेतना की कविता का तात्विक विवेचन; राष्ट्रीय चेतना की कविता में देश–प्रेम के विविध आयाम; हिंदी साहित्य के विविधयुगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना का विकास; देश के स्वाधीनता–संग्राम में हिन्दी–काव्य की भूमिका; हिन्दी लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना।	10
II	**राष्ट्रीय चेतना सम्पन्न प्राचीन काव्य :** **क. चंदवरदाई** : पृथ्वीराज रासो के रेवा तट समय के अंश (चढ़त राज पृथिराज)। **ख. भूषण** : इन्द्र जिमि जंभ पर; बाने फहराने; निज म्यान तें मयूखें; दारुन दहत हरनाकुश बिदारिबे को।	10
III	**भारतेन्दु एवं द्विवेदीयुगीन काव्य :** **क. भारतेन्दु हरिश्चंद्र** : उन्नत चित हवै आर्य परस्पर प्रीत बढ़ावें; बल कला कौशल अमित विद्या वत्स भरे मिल लहै; भीतर–भीतर सब रस चूसै; सब गुरजन को बुरो बताबै। **ख. मैथिलीशरण गुप्त** : आर्य, मातृभूमि।	10
IV	**छायावादयुगीन काव्य :** **क. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला** : वर दे वीणावादिनि वर दे; भारती वंदना (भारति जय विजय करे); जागो फिर एक बार–2। **ख. महादेवी वर्मा** : जाग तुझको दूर जाना।	9
V	**राष्ट्रीय सांस्कृतिक–काव्यधारा :** **क. माखनलाल चतुर्वेदी** : पुष्प की अभिलाषा; जवानी। **ख. सुभद्रा कुमारी चौहान** : वीरों का कैसा हो बसंत; झाँसी की रानी।	9
VI	**छायावादोत्तर राष्ट्रीय काव्य :** **क. बालकृष्ण शर्मा नवीन** : कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ; कोटि–कोटि कंठों से निकली आज यही स्वरधारा है। **ख. रामधारी सिंह दिनकर** : शहीद स्तवन (कलम आज उनकी जय बोल); हिमालय।	9
VII	**समकालीन राष्ट्रीय काव्य (प्रथम चरण) :** **क. श्यामनारायण पांडेय** : चेतक की वीरता; राणा प्रताप की तलवार। **ख. द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी** : उठो धारा के अमर सपूतो; वीर तुम बढ़े चलो।	9
VIII	**समकालीन राष्ट्रीय काव्य (द्वितीय चरण) :** **क. सोहनलाल द्विवेदी** : मातृभूमि; तुम्हें नमन (चल पड़े जिधर दो डग मग में)। **ख. अटलबिहारी बाजपेयी** : कदम मिलाकर चलना होगा; उनको याद करें।	9

(निर्देश : इकाई 2 से 8 तक के लिए आलोचना–बिंदु : कवियों का काव्य–सौष्ठव, कविताओं का अनुभूति पक्ष तथा काव्य–सौंदर्य।)

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयकम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे, किन्तु इकाई–I से प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। इकाई II से VIII तक कुल 6 व्याख्याएँ पूछी जायेंगीं। एक इकाई से एक से अधिक व्याख्या नहीं पूछी जायेगी। इनमें से कोई तीन व्याख्याएँ विद्यार्थियों को करनी होंगीं। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित हैं। इस तरह 12X4=48 तथा 9X3=27 में इस प्रश्नपत्र के अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. उदयनारायण तिवारी, वीर काव्य, भारती भण्डार, प्रयाग, प्रथम संस्करण, संवत 2005वि.
2. चंदबरदाई, पृथ्वीराज रासो, मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्याम सुन्दर दास, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, प्रथम संस्करण, सन 1906
3. शांता सिंह, चंदबरदाई, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पुनर्मुद्रण सन 2017
4. राजमल बोरा, भूषण, साहित्य अकादेमी, नयी दिल्ली, पुनर्मुद्रण सन 2017
5. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी, संवत 2010 वि.
6. ब्रजरत्न दास, भारतेंदु ग्रंथावली, वाराणसी
7. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन 2008
8. विनोद शंकर व्यास (संपा.), प्रसाद और उनका साहित्य, विद्या भास्कर बुक डिपो, वाराणसी
9. नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
10. kavitakosh.org
11. epustakalay.com
12. ndl.iitkgp.ac.in (National digital library of India)

कार्यक्रम/कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर : **V**
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010502T (O)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : भारतीय साहित्य	

पाठ्यक्रम परिणाम **(Course outcomes) :**

भारत बहुभाषा–भाषी देश है, किंतु भारत की विभिन्न संस्कृतियों में एक प्रकार की सूत्रबद्धता है। तदनुसार भारतीय भाषाओं और साहित्य में भी समानता के बहुत से बिन्दु मिलते हैं। इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से विद्यार्थी उनसे परिचित हो सकेंगे और हिन्दी के साथ ही भारत की अन्य भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य से अवगत हो सकेंगे। बहुभाषी भारत में एक–दूसरे की समाज–संस्कृति को समझने तथा भावात्मक एकता का अनुभव करने के लिए भिन्न–भिन्न भाषाओं में लिखा जा रहा साहित्य एक अच्छा माध्यम है। इसके अध्ययन से आगे चलकर वे भारत की विभिन्न भाषाओं तथा साहित्य के अध्ययन के प्रति प्रेरित होंगे।

क्रेडिट : **05**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **75**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**सैद्धांतिकी :** भारतीय साहित्य की अवधारणा और स्वरूप; भारत की बहुभाषिकता और भारतीय साहित्य; भारतीय साहित्य की परम्परा; भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं; भारतीय साहित्य में एकतामूलक तत्व; भारतीय साहित्य में आधुनिक भारत का बिम्ब।	10
II	**उपन्यास :** पाठ्य उपन्यास : शव काटने वाला आदमी– येशे दोरजी थोङ्ग्छी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली (मूल असमिया से अनुवाद– मुनीन्द्र मिश्र)	10
III	**'शव काटने वाला आदमी' उपन्यास की आलोचना :** 'शव काटने वाला आदमी' उपन्यास की समीक्षा, 'शव काटने वाला आदमी' में चित्रित समाज, संस्कृति तथा धर्म; 'शव काटने वाला आदमी' की कथा–संवेदना; 'शव काटने वाला आदमी' उपन्यास में युगबोध; येशे दोरजी थोङ्ग्छी का साहित्यिक परिचय।	10
IV	**कहानियां–1 :** उड़िया : पढ़ी–लिखी बहू– फकीर मोहन सेनापति मणिपुरी : मणियों की खान– लमाबम वीरमणि कहानियों की आलोचना : कहानी–कला की दृष्टि से पठित कहानियों की समीक्षा तथा कथा–संवेदना का वैशिष्ट्य।	9
V	**कहानियां–2 :** मराठी : मेरा नाम– शंकरराव खरात न्यीशी : उई मोक– प्रस्तुति : डॉ. जमुना बीनी 'तादर' (अरुणाचल प्रदेश की न्यीशी जनजाति की लोककथा) कहानियों की आलोचना : कहानी–कला की दृष्टि से पठित कहानियों की समीक्षा तथा कथा–संवेदना का वैशिष्ट्य।	9
VI	**कविताएँ–1 :** क. तमिल : नाचेंगे हम– सुब्रह्मण्यम भारती ख. तेलगु : जन्मभूमि– रायप्रोलु वेंकट सुब्बाराव ग. मलयालम : महान दीवार पर– के. सच्चिदानंदन आलोचना के बिन्दु : कवियों का साहित्यिक परिचय तथा पठित कविताओं का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य।	9
VII	**कविताएँ–2 :** क. संस्कृत : पत्र–मंजूषा– राधावल्लभ त्रिपाठी ख. बांग्ला : जहाँ चित्त भय शून्य– रवीन्द्र नाथ ठाकुर	9

	ग. उर्दू : आज दुनिया पे रात भारी है– रघुपतिसहाय फिराक आलोचना के बिन्दु : कवियों का साहित्यिक परिचय तथा पठित कविताओं का प्रतिपाद्य एवं वैशिष्ट्य।	
VIII	**कविताएँ–3 :** क. डोगरी : डोगरी– पद्मा सचदेव ख. पंजाबी : वारिसशाह से– अमृता प्रीतम ग. गुजराती : वर दे इतना; छोटा मेरा खेत– उमाशंकर जोशी आलोचना के बिन्दु : कवियों का साहित्यिक परिचय तथा पठित कविताओं का प्रतिपाद्य एवं काव्य–सौंदर्य।	9

(इकाई 6, 7, 8 में चयनित कविताओं के लिए पाठ्यपुस्तक– आधुनिक भारतीय कविता; सम्पादक– अवधेश नारायण मिश्र, नन्द किशोर पाण्डेय; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे, किन्तु इकाई–I से प्रश्न का उत्तर देना अनिवार्य होगा। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। इकाई I तथा III को छोड़कर शेष से 6 व्याख्याएँ पूछी जायेंगी। प्रत्येक इकाई से एक से अधिक व्याख्या नहीं पूछी जायेगी। इनमें से कोई तीन व्याख्याएँ विद्यार्थियों को करनी होंगीं। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित हैं। इस तरह 12X4=48 तथा 9X3=27 में इस प्रश्नपत्र के अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।
5. पाठ्यक्रम कोड में कोष्ठक में दिये गये (O) का अभिप्राय विकल्प (Option) से है। इसका तात्पर्य यह है कि इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी यदि चाहें तो **राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी साहित्य** के स्थान पर **भारतीय साहित्य** का चयन कर सकते हैं।

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. रामविलास शर्मा; भारतीय साहित्य की भूमिका; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. मूलचंद गौतम; भारतीय साहित्य; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. डॉ. आरसु; भारतीय साहित्य : आशा और आस्था; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. रामविलास शर्मा; भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ; वाणी प्रकाशन, दिल्ली। :
6. डॉ. नगेंद्र (संपा.); भारतीय साहित्य; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
7. केशवचन्द्र वर्मा; भारतीयता की पहचान; लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली। :
8. के. सच्चिदानन्द; भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्थापनाएँ; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

कार्यक्रम/कक्षा : डिग्री	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर : VI
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : A010601T	पाठ्यक्रम शीर्षक : भाषा विज्ञान, हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि	

पाठ्यक्रम परिणाम **(Course outcomes) :**

यह प्रश्नपत्र बहुउद्देश्यीय है। इसके अध्ययन से विद्यार्थी भाषा, भाषा विज्ञान तथा देवनागरी लिपि के बारे में जान सकेंगे। इससे उन्हें भाषा के अंगों, हिन्दी भाषा के उद्भव तथा विकास और देवनागरी लिपि के स्वरूप की जानकारी प्राप्त होगी। विद्यार्थी हिन्दी की वैज्ञानिक एवं वैधानिक स्थिति से परिचित तो हो ही सकेंगे, क्षेत्रीय लोकभाषाओं के रूप में अवधी अथवा भोजपुरी के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट : 05	पूर्णांक : 25+75 =100	उत्तीर्णांक : 10+30=40

कुल व्याख्यान संख्या- **75**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**भाषा एवं भाषाविज्ञान का सामान्य परिचय :** भाषा : परिभाषा और स्वरूप, भाषा और बोली। भाषाविज्ञान : परिभाषा, क्षेत्र, शाखाएँ; भाषा विज्ञान के अध्ययन की पद्धतियाँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक, तुलनात्मक।	10
II	**ध्वनि विज्ञान और अर्थ विज्ञान :** ध्वनि विज्ञान : हिन्दी की ध्वनियों का वर्गीकरण; ध्वनि–परिवर्तन के कारण; ध्वनि–परिवर्तन की दिशाएँ। अर्थ विज्ञान : शब्द और अर्थ का सम्बंध; अर्थ– परिवर्तन के कारण; अर्थ–परिवर्तन की दिशाएँ।	10
III	**रूप विज्ञान और वाक्य विज्ञान :** रूप विज्ञान : रूपिम की अवधारणा और प्रकार; पद–सम्बन्धी रूप–परिवर्तन के कारण। वाक्य विज्ञान : वाक्य की परिभाषा; वाक्य के अंग; वाक्यों के प्रकार।	9
IV	**हिन्दी भाषा की उत्पत्ति तथा विकास :** हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति, हिन्दी भाषा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि। हिन्दी के विविध रूप– डिंगल–पिंगल, अवहट्ट; पुरानी हिन्दी, हिंदवी, दक्खिनी, ब्रजबुली, रेख्ता, उर्दू, भाखा, हिंदुस्तानी आदि।	9
V	**हिन्दी की शब्द–सम्पदा :** तत्सम; तद्भव, देशज, विदेशी, भारतीय भाषाओं से आगत शब्द आदि। हिन्दी का मानकीकरण।	9
VI	**हिन्दी की उपभाषाओं तथा बोलियों का परिचय :** पश्चिमी हिन्दी पूर्वी हिन्दी पहाड़ी हिन्दी राजस्थानी हिन्दी बिहारी हिन्दी	10
VII	**देवनागरी लिपि :** नामकरण; उद्भव और विकास; विशेषताएं; समस्याएँ एवं सुधार।	9
VIII	**क्षेत्रीय बोली का विशेष अध्ययन** भोजपुरी का विकास–क्रम भोजपुरी का क्षेत्र भोजपुरी की विशेषताएँ अथवा अवधी का विकास–क्रम अवधी का क्षेत्र	9

	अवधी की विशेषताएँ	

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 5–5 अंकों की कुल 8 टिप्पणियाँ पूछी जायेगी। इनमें से कोई चार टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। सभी इकाइयों से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 7 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। इस तरह 12X4=48 तथा 5X4=20 तथा 1X7=07 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सकियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।
4. **सभी विद्यार्थियों को इस प्रश्नपत्र के अतिरिक्त किसी विषय पर एक परियोजना कार्य करना होगा, जो तीन क्रेडिट का होगा। इस हेतु विषय का चयन विद्यार्थी अपनी रुचि, सुविधा और अपने शिक्षक के निर्देशानुसार करेंगे।**

सहायक ग्रन्थ :

1. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, 1972
2. कपिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1980
3. डॉ. रामकिशोर शर्मा, हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
4. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
5. सत्यनारायण त्रिपाठी, हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1981
6. राजमणि शर्मा, हिंदी भाषा : इतिहास एवं स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
7. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 1999
8. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा और लिपि, हिन्दुस्तानी अकेडमी, प्रयाग, 1951
9. हरदेव बाहरी, हिन्दी : उद्‌भव, विकास और रूप, किताबमहल, इलाहाबाद, 42 वाँ संस्करण, 2018

कार्यक्रम/कक्षा : डिग्री	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर : **VI**
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010602T**	पाठ्यक्रम शीर्षक : लोक साहित्य	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

लोक साहित्य लोक की जीवन–शैली में रचा–बसा है और लोकमानस को शताब्दियों–सहस्राब्दियों से प्रभावित करता रहा है। इस प्रश्नपत्र के द्वारा विद्यार्थी लोक साहित्य के स्वरूप को समझ सकेंगे और उसके वैशिष्ट्य तथा उपयोगिता को जानकर उसके अध्ययन तथा उसके प्रति शोध के लिये प्रेरित हो सकेंगे।

क्रेडिट : **05**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **75**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**लोक साहित्य का सामान्य परिचय :** लोक की अवधारणा; लोक साहित्य : परिभाषा और स्वरूप; लोक साहित्य का वर्गीकरण; लोक साहित्य की विशेषताएँ एवं महत्त्व। लोक जीवन में लोक साहित्य की स्थिति और भूमिका; लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास। लोक साहित्य में नित्य नूतनता और प्रसार।	10
II	**साहित्य, लोक साहित्य और लोक संस्कृति :** लोक साहित्य और साहित्य में अन्तर; लोक साहित्य और साहित्य में पारस्परिक सम्बन्ध (साहित्य में लोक साहित्य के तथा लोक साहित्य में साहित्य के तत्त्वों की व्याप्ति एवं प्रभाव); लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति में अंतःसंबंध; लोक साहित्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना।	9
III	**लोक साहित्य का संकलन एवं अध्ययन :** लोक साहित्य के संकलन एवं संरक्षण की आवश्यकता तथा महत्त्व; लोक साहित्य की उपलब्धियाँ एवं सीमाएँ; लोक साहित्य के संकलन की विधियाँ एवं समस्याएँ; लोक साहित्य के संकलन एवं अध्ययन की कठिनाइयाँ; लोक साहित्य के अध्ययन की वर्तमान स्थिति तथा सम्भावनाएँ।	10
IV	**लोक साहित्य की विविध विधाएँ– एक :** लोकगीत : परिभाषा एवं प्रकार; लोकगीतों की विशेषताएँ; लोककथा का अर्थ एवं विशेषताएँ; लोकजीवन में लोककथाओं की भूमिका एवं महत्ता; लोकगाथा : अभिप्राय एवं स्वरूप; लोकगाथा का लोकगीत और लोककथा से अन्तर।	10
V	**लोक साहित्य की विविध विधाएँ– दो :** लोकनाट्य का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार; लोकनाट्य की विशेषताएँ; लोकसुभाषित का अर्थ तथा भेद; लोकोक्ति का अर्थ एवं वर्गीकरण; मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर।	9
VI	**हिन्दी का लोक साहित्य :** हिन्दी–क्षेत्र और उसकी प्रमुख बोलियाँ; हिन्दी की बोलियों के लोक साहित्य में पारस्परिक समानता के सूत्र; हिन्दी लोक साहित्य का अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य; हिन्दी लोक साहित्य के शास्त्रीय आधार।	9
VII	**भोजपुरी/अवधी लोक साहित्य–1 :** भोजपुरी बोली और क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय; भोजपुरी लोक साहित्य का सामान्य परिचय; भोजपुरी लोकगीतः वर्गीकरण एवं विशेषताएँ, भोजपुरी लोककथाओं के प्रमुख प्रकार एवं विशेषताएँ। **अथवा** अवधी बोली और क्षेत्र का संक्षिप्त परिचय; अवधी लोक साहित्य का सामान्य परिचय; अवधी लोकगीत : वर्गीकरण एवं विशेषताएँ, अवधी लोककथाओं के प्रमुख प्रकार एवं विशेषताएँ।	9
VIII	**भोजपुरी/अवधी लोक साहित्य–2 :**	9

	भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित प्रमुख लोकगाथाओं का स्वरूप; भोजपुरी के प्रमुख लोकनाट्यों का परिचय; भोजपुरी के प्रकीर्ण साहित्य का संक्षिप्त परिचय। भोजपुरी लोक साहित्य का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य। **अथवा** अवधी क्षेत्र में प्रचलित प्रमुख लोकगाथाओं का स्वरूप; अवधी के प्रमुख लोकनाट्यों का परिचय; अवधी के प्रकीर्ण साहित्य का संक्षिप्त परिचय। अवधी लोक साहित्य का राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य।	

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 5–5 अंकों की कुल 8 टिप्पणियाँ पूछी जायेगी। इनमें से कोई चार टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। पूरे पाठ्यक्रम से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 7 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। एक इकाई से एक से अधिक प्रश्न नहीं दिया जायेगा। इस तरह 12X4=48 तथा 5X4=20 तथा 1X7=07 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोडे जायें।

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक साहित्य और संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 1973
2. डॉ. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1973
3. डॉ. उषा सक्सेना, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली, 2007
4. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज, 1957
5. रामनाथ सुमन, संपादक, सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति विशेषांक, प्रयागराज, संवत 2010
6. प्रो. चितरंजन मिश्र एवं दुर्गाप्रसाद ओझा, समकालीन हिंदी एवं अवधी कविता, प्रकाशन केंद्र लखनऊ
7. डॉ. श्रीधर मिश्र, भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज, 1971
8. डॉ. वीरेन्द्र सिंह यादव, भारत का लोक सांस्कृतिक विमर्श, कौटिल्य बुक्स, नई दिल्ली, 2018
9. डॉ. सत्येंद्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल कंपनी, आगरा, 1971
10. कृष्णदेव उपाध्याय, भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन, हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी, 1949

कार्यक्रम/कक्षा : डिग्री	बी. ए. तृतीय वर्ष	सेमेस्टर : VI
विषय : हिन्दी		
पाठ्यक्रम कोड : **A010602T (O)**	पाठ्यक्रम शीर्षक : अवधी एवं भोजपुरी साहित्य	

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

विद्यार्थियों को हिन्दी के साथ–साथ उसकी क्षेत्रीय उपभाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य से अवगत कराने के क्रम में उन्हें सिद्धार्थ विश्वविद्यालय परिक्षेत्र में प्रचलित अवधी और भोजपुरी के अधुनातम साहित्य से परिचित कराना, जिससे वे इनके अद्यतन स्वरूप और स्थिति को जान सकें।

क्रेडिट : **05**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **75**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **6-0-0** अथवा **4-2-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**अवधी साहित्य का सामान्य परिचय :** अवधी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; अवधी साहित्य की विकास–यात्रा; अवधी साहित्य का स्वरूप; अवधी साहित्य की प्रवृत्तियाँ।	9
II	**अवधी काव्य–1 :** देश का को है जिम्मेदार– वंशीधर शुक्ल कंगला किसान की बिटिया– बलभद्रप्रसाद दीक्षित 'पढ़ीस' भारत हमार– राम अकबाल त्रिपाठी 'अनजान' (संकलन– अवधी ग्रंथावली; खंड–4 (आधुनिक साहित्य खण्ड); संपादक– जगदीश पीयूष; वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली) आलोचना के बिन्दु : कवि परिचय; कविताओं का प्रतिपाद्य एवं काव्य–सौंदर्य।	9
III	**अवधी काव्य–2 :** गाँव है हमका बहुत पियार– रमई काका गांधी बाबा– असविन्द द्विवेदी पाती– आद्याप्रसाद उन्मत्त (संकलन– अवधी ग्रंथावली; खंड–4 (आधुनिक साहित्य खण्ड) आलोचना के बिन्दु : कवि परिचय; कविताओं का प्रतिपाद्य एवं काव्य–सौंदर्य।	9
IV	**अवधी गद्य :** आत्मकथा : अवधी में सत्यधर शुक्ल की आत्मकथा– सत्यधर शुक्ल निबन्ध : अवधी मा कहावति– आद्याप्रसाद सिंह 'प्रदीप' कहानी : भैंरो क माई– विद्याबिन्दु सिंह (संकलन– अवधी ग्रंथावली; खंड–5 (आधुनिक साहित्य गद्य खण्ड) संपादक– जगदीश पीयूष; वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली) आलोचना के बिन्दु : पठित रचनाओं का प्रतिपाद्य तथा विधा–विशेष के आधार पर समीक्षा।	10
V	**भोजपुरी साहित्य का सामान्य परिचय :** भोजपुरी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; भोजपुरी साहित्य की विकास–यात्रा; भोजपुरी साहित्य का स्वरूप; भोजपुरी साहित्य की प्रवृत्तियाँ।	9
VI	**भोजपुरी काव्य–1 :** क. बटोहिया– बाबू रघुवीर नारायण ख. अछूत के शिकायत– हीरा डोम ग. फिरंगिया– मनोरंजन प्रसाद सिन्हा आलोचना के बिन्दु : कवि परिचय एवं कविताओं का प्रतिपाद्य तथा वैशिष्ट्य।	9
VII	**भोजपुरी काव्य–2 :** क. कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियाँ– पं. धरीक्षण मिश्र ख. किछु कहलो न जाला– रामजियावन दास बावला ग. सपना; समाजवाद– गोरख पाण्डेय	10

	आलोचना के बिन्दु : कवि परिचय एवं कविताओं का प्रतिपाद्य तथा वैशिष्ट्य।	
VIII	भोजपुरी गद्य : ललित निबंध : कोजागरी– शिवप्रसाद सिंह व्याख्यान : हजारी प्रसाद द्विवेदी क्हानी : तिसरकी आँख के अन्हार– रामदेव शुक्ल आलोचना के बिन्दु : पठित रचनाओं का प्रतिपाद्य तथा विधा–विशेष के आधार पर समीक्षा।	10

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके समस्त विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का चयन मेजर विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 12 अंक निर्धारित हैं। इकाई I तथा V को छोड़कर सभी इकाइयों से कुल 6 व्याख्याएँ पूछी जायेंगी। प्रत्येक इकाई से एक से अधिक व्याख्या नहीं पूछी जायेगी। इनमें से कोई तीन व्याख्याएँ विद्यार्थियों को करनी होंगीं। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित हैं। इस तरह 12X4=48 तथा 9X3=27 में इस प्रश्नपत्र के अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।
4. पाठ्यक्रम कोड में कोष्ठक में दिये गये (O) का अभिप्राय विकल्प (Option) से है। इसका तात्पर्य यह है कि इस प्रश्नपत्र में विद्यार्थी यदि चाहें तो लोक साहित्य के स्थान पर अवधी एवं भोजपुरी साहित्य का चयन कर सकते हैं।
5. सभी विद्यार्थियों को इस प्रश्नपत्र के अतिरिक्त किसी विषय पर एक परियोजना कार्य करना होगा, जो तीन केडिट का होगा। इस हेतु विषय का चयन विद्यार्थी अपनी रुचि, सुविधा और अपने शिक्षक के निर्देशानुसार करेंगे।

सहायक ग्रन्थ :

1. अवधी ग्रंथावली; खंड–4 (आधुनिक साहित्य खण्ड); संपादक– जगदीश पीयूष; वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
2. अवधी ग्रंथावली; खंड–5 (आधुनिक साहित्य गद्य खण्ड) संपादक– जगदीश पीयूष; वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
3. भोजपुरी साहित्य संचयन; प्रो. चित्तरंजन मिश्र, डॉ. विमलेश मिश्र; नीलकमल प्रकाशन, गोरखपुर।
4. लोक काव्य एवं आधुनिक काव्य; डॉ. लाल जी द्विवेदी; विजय प्रकाशन मन्दिर, वाराणसी।
5. भोजपुरी का स्वनिमिकीय अध्ययन; डॉ. अमित कुमार भारती; ज्ञान प्रकाशन, कानपुर।

कार्यक्रम / कक्षा : **सर्टिफिकेट**	**बी. ए. प्रथम वर्ष**	सेमेस्टर : **I**

विषय : **हिन्दी (माइनर)**

पाठ्यक्रम कोड : A010602T (M)	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी काव्य और काव्यशास्त्र**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

विद्यार्थियों को प्राचीन और नवीन कतिपय प्रतिनिधि हिन्दी कवियों और उनकी कविताओं का ज्ञान कराना जिससे वे हिन्दी कविता की सामान्य विशेषताओं को समझ सकें और उनमें हिन्दी कविता के और भी अध्ययन के प्रति रुचि विकसित हो सके। हिन्दी की स्थानीय उपभाषाओं अवधी अथवा भोजपुरी की कुछ चयनित काव्य–रचनाओं के अध्ययन के साथ ही भारतीय काव्यशास्त्र के भी ऐसे उपयोगी तत्त्वों के बारे में सामान्य जानकारी प्रदान करना, जो प्रतियोगी परीक्षाओं में उनके काम आ सकें।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **4-0-0** अथवा **3-1-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**भक्तिकालीन–काव्य :** **क. कबीरदास :** (कबीरदास; संपादक– श्यामसुंदर दास) गुरुदेव को अंग– 01,06,11,17,20 तथा विरह को अंग–04,10,12,20,33। **आलोचना के बिन्दु–** कबीर की भक्ति, कबीर का समाज–दर्शन। **ख. तुलसीदास :** श्रीरामचरितमानस; गीता प्रेस, गोरखपुर अयोध्याकाण्ड; दोहा संख्या– 28 से 41। आलोचना– तुलसी का समन्वयवाद, काव्यगत विशेषताएँ।	10
II	**रीतिकालीन काव्य :** **क. बिहारीलाल :** बिहारी रत्नाकर; संपादक– जगन्नाथदास रत्नाकर दोहा संख्या– 1,2,5,6,7,15,19,20,21,25,32,38। आलोचना के बिन्दु– बिहारी : रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि, बिहारी की कविताओं में गागर में सागर। **ख. घनानन्द** (घनानन्द कवित्त; संपादक– विश्वनाथ प्रसाद मिश्र) छंद संख्या– 1 से 7 तक। **आलोचना के बिन्दु–** रीतिमुक्त काव्यधारा और घनानन्द; घनानन्द का प्रेम–वर्णन।	10
III	**छायावादी काव्य :** **क. जयशंकर प्रसाद :** बीती विभावरी जाग री; पेशोला की प्रतिध्वनि। आलोचना : जयशंकर प्रसाद और छायावाद; जयशंकर प्रसाद का काव्य–वैभव। **ख. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला :** जागो फिर एक बार–2; वर दे वीणावादिनि। निराला की काव्यगत विशेषताएँ; निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना।	10
IV	**प्रगति–प्रयोगवादी काव्य :** **क. अज्ञेय :** यह दीप अकेला, कलगी बाजरे की। आलोचना के बिन्दु : प्रयोगवाद और अज्ञेय, संकलित कविताओं का प्रतिपाद्य और समीक्षा। **ख. मुक्तिबोध :** विचार आते हैं; मुझे हर कदम पर चौराहे मिलते हैं। **आलोचना के बिन्दु–** मुक्तिबोध की काव्य–संवेदना, आधुनिक कवियों में मुक्तिबोध का स्थान।	10
V	**काव्यशास्त्र का सामान्य परिचय :** काव्य के लक्षण, काव्य–प्रयोजन, काव्य हेतु तथा काव्य की आत्मा।	10
VI	**अलंकार–छन्द परिचय :** अलंकार का अर्थ तथा उपयोगिता; अलंकार–वर्गीकरण। अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, पुनरुक्तिप्रकाश, संदेह, भ्रांतिमान तथा मानवीकरण अलंकारों का सोदाहरण परिचय। छंद की परिभाषा तथा तत्त्व; छंदों के भेद तथा कविता में उनका महत्त्व। चौपाई, सोरठा, दोहा, कवित्त, सवैया, कुण्डलिया, रोला, गीतिका, वंशस्थ, मन्दाक्रान्ता, तथा मुक्त छंद के लक्षण और उदाहरण।	10

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके कला संकाय के अतिरिक्त किसी भी अन्य संकाय में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन सहायक (माइनर) विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 17 अंक निर्धारित हैं। इकाई I से लेकर IV तक प्रत्येक इकाई से कुल 4 व्याख्यांश व्याख्या के लिये दिये जायेंगे। इनमें से किन्हीं दो की व्याख्या विद्यार्थियों को करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 12 अंक निर्धारित होंगे। इस तरह 17X3=51 तथा 12X2=24 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।

सहायक ग्रन्थ :

1. मुंशीलाल शर्मा, सूरदास और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
2. किशोरीलाल, सूर और उनका भ्रमरगीत, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1993
3. नन्ददुलारे वाजपेयी, सूर संदर्भ, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग
4. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937
5. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953
6. राजेन्द्र सिंह गौड़, आधुनिक कवियों की काव्य साधना, श्रीराम मेहता एंड संस, आगरा, 1953
7. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
8. शम्भूनाथ सिंह, छायावाद युग, सरस्वती मन्दिर प्रकाशन, वाराणसी 1962
9. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिन्दी कविता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. रामस्वरूप चतुर्वेदी, अज्ञेय का रचना संसार, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. डॉ. हंसराज त्रिपाठी, आत्मसंघर्ष की कविता और मुक्तिबोध, मानस प्रकाशन, प्रतापगढ़
12. अज्ञेय, दूसरा सप्तक, प्रगति प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रतीक प्रकाशन माला, 1951
13. देवेन्द्रनाथ शर्मा, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, मयूर पेपर बैक्स, नोएडा, 2002
14. नंदकिशोर नवल, हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1981
15. बच्चन सिंह, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़ 1987
16. भगीरथ मिश्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1988
17. भगीरथ मिश्र काव्यशास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
18. विश्वनाथ त्रिपाठी, हिन्दी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1992
19. डॉ. रामचन्द तिवारी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, 2010
20. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिन्तन, राधकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1990
21. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'; परिमल; लोकभारती राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
22. डॉ. सत्येन्द्र कुमार दुबे; मन डूब गया; नालंदा प्रकाशन दिल्ली, 2020

कार्यक्रम / कक्षा : सर्टिफिकेट	बी. ए. प्रथम वर्ष	सेमेस्टर : II

विषय : **हिन्दी (माइनर)**

पाठ्यक्रम कोड : A010602T(M)	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी साहित्य का इतिहास तथा भाषा विज्ञान**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा और साहित्य के इतिहास का ज्ञान कराना जिससे वे हिन्दी भाषा और साहित्य में विभिन्न कालखण्डों में आये परिवर्तनों को समझ सकें और प्रतियोगी परीक्षाओं में पूछे जाने वाले प्रश्नों की तैयारी कर सकें। उन्हें भाषाविज्ञान जैसे उपयोगी विषय की भी सामान्य जानकारी देना।

केडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **4-0-0** अथवा **3-1-0** इत्यादि

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि और आदिकाल :** हिन्दी भाषा और साहित्य की पृष्ठभूमि; हिन्दी साहित्य का कालविभाजन और नामकरण; हिन्दी साहित्य के आदिकाल की परिस्थितियाँ; हिन्दी का आदिकालीन साहित्य और उसकी प्रवृत्तियाँ।	10
II	**हिन्दी साहित्य का मध्यकाल :** भक्तिकाल की परिस्थितियाँ; भक्तिकालीन साहित्य का वर्गीकरण और प्रवृत्तियाँ; रीतिकाल का नामकरण और परिस्थितियाँ; रीतिकालीन साहित्य का वर्गीकरण और विशेषताएँ।	10
III	**हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल (कविता–1) :** आधुनिक काल के उदय की पृष्ठभूमि; आधुनिक काल की सामान्य विशेषताएँ; आधुनिककालीन कविता का विकास–क्रम : भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, छायावादोत्तर तथा स्वातन्त्र्योत्तर युग की परिस्थितियाँ एवं प्रवृत्तियाँ।	10
IV	**हिन्दी गद्य एवं पत्रकारिता :** हिन्दी गद्य की पृष्ठभूमि; आधुनिककालीन हिन्दी गद्य का उदय और उसका प्रारम्भिक स्वरूप; हिन्दी की गद्य विधाओं नाटक, निबंध, उपन्यास, कहानी का उद्भव और विकास; हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास।	10
V	**भाषा एवं भाषा विज्ञान :** भाषा की परिभाषा तथा अभिलक्षण; भाषा विज्ञान : अर्थ एवं प्रकार; अध्ययन की दिशाएँ– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; भाषा विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध।	10
VI	**हिन्दी भाषा का वैशिष्ट्य :** भारोपीय भाषा परिवार और हिन्दी; हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ; हिन्दी की ध्वनियों का वर्गीकरण; ध्वनि–परिवर्तन की दिशाएँ और कारण।	10

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. नगेन्द्र, (संपा.), हिन्दी साहित्य का इतिहास, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1976
2. बच्चन सिंह, हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
3. रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
4. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2019
6. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011
7. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, 1972
8. कपिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1980

9. डॉ. रामकिशोर शर्मा, हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
10. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
11. सत्यनारायण त्रिपाठी, हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1981
12. राजमणि शर्मा, हिंदी भाषा : इतिहास एवं स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
13. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 1999
14. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा और लिपि, हिन्दुस्तानी अकेडमी, प्रयाग, 1951
15. हरदेव बाहरी, हिन्दी : उद्‌भव, विकास और रूप, किताबमहल, इलाहाबाद, 42 वाँ संस्करण, 2018

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके कला संकाय के अतिरिक्त किसी भी अन्य संकाय में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम का चयन सहायक (माइनर) विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 17 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 6–6 अंकों के कुल 6 लघु उत्तरीय प्रश्न पूछे जायेंगे। इनमें से कोई तीन प्रश्न विद्यार्थियों को लिखने होंगे। सभी इकाइयों से 1–1 अंक के कुल मिलाकर 6 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे। एक इकाई से एक से अधिक प्रश्न नहीं पूछा जायेगा। इस तरह 17X3=51 तथा 6X3=18 तथा 1X6=06 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।

कार्यक्रम / कक्षा : **डिप्लोमा**	**बी. ए. द्वितीय वर्ष**	सेमेस्टर **: III**

विषय : **हिन्दी माइनर**

पाठ्यक्रम कोड : A010401T(M)	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी गद्य**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस पत्र का विषयक्षेत्र हिन्दी के विद्यार्थियों को हिन्दी गद्य की प्रमुख विधाओं का सम्यक ज्ञान देना तथा उन्हें हिन्दी की कुछ प्रतिनिधि गद्य रचनाओं का अध्ययन करवाना है। इससे हिन्दी गद्य के अध्ययन, लेखन तथा आलोचना के प्रति उनकी रुचि विकसित होगी। गद्य साहित्य के पठन–पाठन की समुचित रीति को समझकर उनमें आलोचकीय विवेक उत्पन्न होगा और रचनाओं में अन्तर्निहित जीवन–मूल्यों से जुड़कर वे हिन्दी साहित्य की महत्ता को समझ सकेंगे। लेखन के क्षेत्र में कैरियर बनाने के इच्छुक विद्यार्थियों को इस पत्र से विशेष लाभ प्राप्त होगा।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **4-0-0** अथवा **3-1-0** इत्यादि

इकाई	**विषयवस्तु**	**व्याख्यानों की संख्या**
I	**नाटक :** अंधेरनगरी– भारतेन्दु हरिश्चंद्र आलोचना के बिन्दु– हिन्दी नाटक को भारतेन्दु हरिश्चंद्र का योगदान; 'अंधेरनगरी' का प्रतिपाद्य और उसमे निहित व्यंग्य; नाटक के तत्त्वों की दृष्टि से 'अंधेरनगरी' की समीक्षा; 'अंधेरनगरी' का उद्देश्य और प्रासंगिकता।	10
II	**एकांकी :** औरंगजेब की आखिरी रात– रामकुमार वर्मा लक्ष्मी का स्वागत– उपेन्द्रनाथ अश्क सीमारेखा– विष्णु प्रभाकर आलोचना के बिन्दु : एकांकी–कला की दृष्टि से मूल्यांकन, प्रासंगिकता और महत्त्व।	10
III	**उपन्यास :** गबन– प्रेमचंद।	10
IV	**पाठ्य 'गबन' उपन्यास की आलोचना :** हिन्दी उपन्यास और प्रेमचंद; उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर 'गबन' की समीक्षा; 'गबन' के नायक–नायिका का चारित्रिक वैशिष्ट्य; 'गबन' उपन्यास का उद्देश्य और प्रासंगिकता।	10
V	**हिन्दी कहानी :** आकाशदीप–जयशंकर प्रसाद हार की जीत– सुदर्शन लाल पान की बेगम– फणीश्वरनाथ रेणु आलोचना के बिन्दु : कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'आकाशदीप', 'हार की जीत' तथा 'लाल पान की बेगम' कहानियों की समीक्षा; कथानक का सार तथा उद्देश्य।	10
VI	**हिन्दी निबंध :** भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है– भारतेन्दु हरिश्चन्द्र करुणा–आ. रामचन्द्र शुक्ल देवदारु– हजारीप्रसाद द्विवेदी पठित निबंधों की आलोचना : निबंध–कला की दृष्टि से पठित निबंधों का मूल्यांकन तथा प्रतिपाद्य।	10

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके कला संकाय के अतिरिक्त किसी भी अन्य संकाय में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन सहायक विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इकाई III को छोड़कर इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 17 अंक निर्धारित हैं। इकाई IV को छोड़कर शेष इकाइयों में से कुल 4 व्याख्यांश व्याख्या के लिये दिये जायेंगे। एक इकाई से एक से अधिक व्याख्यांश नहीं दिया जायेगा। इनमें से किन्हीं दो की व्याख्या विद्यार्थियों को करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 12 अंक निर्धारित होंगे। इस तरह 17X3=51 तथा 12X2=24 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।
3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि एक–दो महीने कक्षाएँ चल जाने के पश्चात् विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।

सहायक ग्रन्थ :

1. रामचंद्र तिवारी, हिंदी निबंध और निबंधकार, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2007।
2. बच्चन सिंह, आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
3. रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1992।
4. रामचंद्र तिवारी, हिंदी गद्य का इतिहास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2019।
5. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018।
6. रामस्वरूप चतुर्वेदी, गद्य विन्यास और विकास, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 2018।
7. के. सत्यनारायण (संपा.) दृश्य सप्तक, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास, प्रथम संस्करण, सन 1975।
8. सोमनाथ गुप्ता, हिंदी नाटक साहित्य का इतिहास, इंद्रा चंद्र नारंग, इलाहाबाद तीसरा संस्करण, 1951।
9. डॉ. दशरथ ओझा, हिंदी नाटक : उद्‌भव एवं विकास, राजपाल एंड संस, दिल्ली।
10. गिरीश रस्तोगी, हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष, लोकभारती, इलाहाबाद।
11. सत्यवती त्रिपाठी, आधुनिक हिंदी नाटकों में प्रयोगधर्मिता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
12. सिद्धनाथ कुमार, हिंदी एकांकी की शिल्प विधि का विकास, साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद।
13. डॉ. रामचरण महेंद्र, हिन्दी एकांकी, और एकांकीकार वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

द[illegible]क्रम / कक्षा : डिप्लोमा	बी. ए. द्वितीय वर्ष	सेमेस्टर : **IV**

विषय : **हिन्दी माइनर**

पाठ्यक्रम कोड : A010301T (M)	पाठ्यक्रम शीर्षक : **हिन्दी भाषा एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

यह प्रश्नपत्र विद्यार्थियों में हिन्दी में भाषिक और व्यवहारिक कौशल का विकास करने में सहायक होगा। इसके द्वारा विद्यार्थी हिन्दी के व्याकरणिक स्वरूप के उपयोगी तत्त्वों को जानने के साथ–साथ उसमें व्यवहारिक लेखन–सम्बन्धी दक्षता भी प्राप्त कर सकेंगे और अपने को हिन्दी में अधिक कार्यकुशल बना सकेंगे। हिन्दी की संवैधानिक स्थिति को भी इस प्रश्नपत्र के अध्ययन से वे समझ सकेंगे।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75 =100**	उत्तीर्णांक : **10+30=40**

कुल व्याख्यान संख्या- **60**; प्रति सप्ताह ट्यूटोरियल–प्रयोगात्मक घण्टे : **4-0-0** अथवा **3-1-0** इत्यादि

इकाई	**विषयवस्तु**	**व्याख्यानों की संख्या**
I	**हिंदी की संवैधानिक स्थिति :** अनुच्छेद 343 से 351 तक तथा अनुच्छेद 120 और 210; राष्ट्रपति के आदेश–1952, 1955 एवं 1960; राष्ट्रपति के आदेश– सन 1952, 1955 एवं 1960; राजभाषा अधिनियम–1963 यथा–संशोधित 1967; राजभाषा नियम 1976 यथा संशोधित 1987। राजभाषा हिन्दी और राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020।	10
II	**शुद्ध–अशुद्ध हिन्दी :** हिन्दी की वर्तनी, लिंग, वचन, कारक, उच्चारण तथा विराम चिन्हों से संबन्धित होने वाली अशुद्धियाँ और उनका समाधान।	10
III	**हिन्दी में व्यवहारिक लेखन :** सूचना; संदेश; कार्यवृत्त; कार्यसूची; प्रतिवेदन; आत्मविवरण; आवेदन–पत्र तथा ई–मेल लेखन।	10
IV	**हिन्दी में कार्यालयी पत्राचार :** कार्यालयी पत्राचार का स्वरूप एवं विशेषताएँ; पत्र, परिपत्र, स्मरण पत्र, चेतावनी–पत्र, कार्यवाही पत्र; प्रेस विज्ञप्ति; ज्ञापन; तथा तकनीकी एवं ऑनलाइन कार्य–दक्षता।	10
V	**अनुवाद :** अनुवाद का महत्त्व; अनुवाद के प्रकार; अनुवाद के क्षेत्र; अनुवाद के उपकरण; अनुवादक के गुण।	10
VI	**हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय और उपयोगिता; कम्प्यूटर पर हिन्दी में काम करने की सुविधाएँ एवं समस्याएँ; हिन्दी में पीपीटी स्लाइड एवं पोस्टर–निर्माण। इन्टरनेट और हिन्दी; हिन्दी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर एवं वेबसाइटें; सरकारी तथा गैरसरकारी चैनल (ज्ञानदर्शन, ई–पाठशाला, स्वयं, मूक्स आदि)।	10

आवश्यक निर्देश :

1. इण्टरमीडिएट अथवा समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके कला संकाय के अतिरिक्त किसी भी अन्य संकाय में अध्ययनरत समस्त विद्यार्थी इस पाठयक्रम का चयन सहायक (माइनर) विषय के रूप में कर सकते हैं; परन्तु उनके लिए सामान्य हिन्दी भाषा का ज्ञान अपेक्षित है।
2. 75 अंकों की सेमेस्टर परीक्षा हेतु इस प्रश्नपत्र की सभी इकाइयों से एक–एक विस्तृत उत्तरीय प्रश्न पूछा जायेगा, जिनमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियों को देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये 17 अंक निर्धारित हैं। सभी इकाइयों से 6–6 अंकों की कुल 6 टिप्पणियाँ पूछी जायेंगीं। इनमें से कोई तीन टिप्पणियाँ विद्यार्थियों को लिखनी होंगीं। 1–1 अंक के कुल मिलाकर 6 बहुविकल्पीय प्रश्न भी पूछे जायेंगे जिनमें एक इकाई से एक से अधिक प्रश्न सम्मिलित नहीं होगा। इस तरह 17X3=51 तथा 6X3=18 तथा 1X6=06 में इस प्रश्नपत्र के 75 अंक विभाजित होंगे।

3. विद्यार्थियों को 25 अंक आन्तरिक मूल्यांकन के आधार पर दिये जायेंगे। इनमें से 5 अंक विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति, प्रदर्शन और सक्रियता; उसके अच्छे आचरण, व्यवहार तथा संस्था या विभागीय कार्यों में सहयोग आदि के आधार पर दिये जायेंगे। शेष 20 अंकों के लिये परीक्षा, असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि आधार होंगे। अच्छा तो यह हो कि विद्यार्थी की दो लघु परीक्षाएँ कम–से कम एक माह के अन्तराल पर हों और एक असाइनमेंट, परियोजना कार्य आदि दिया जाये। इन तीनों में से दो श्रेष्ठ प्राप्तांकों के औसत अंक मुख्य सेमेस्टर परीक्षा के अंकों के साथ जोड़े जायें।

अध्ययन के लिये सहायक ग्रन्थ :

1. देवेन्द्रनाथ शर्मा; राष्ट्रभाषा हिन्दी : समस्याएँ और समाधान; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
2. शैलेन्द्र सेंगर; मीडिया लेखन और सम्पादन;आविष्कार प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ. विजय कुलश्रेष्ठ; संचार माध्यम : तकनीक और लेखन; श्याम प्रकाशन, जयपुर।
4. गोपीनाथ श्रीवास्तव; सरकारी कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. असगर वजाहत/प्रेमरंजन; टेलीविजन लेखन;राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो वार्ता शिल्प; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. सिद्धनाथ कुमार; रेडियो नाटक की कला; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. रचनात्मक लेखन; रमेश गौतम; भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।
9. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली।
10. रामचंद्र सिंह सागर, कार्यालय कार्य विधि, आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली, 1963
11. चंद्रपाल शर्मा, कार्यालयीन हिन्दी की प्रकृति, समता प्रकाशन, दिल्ली, 1991
12. प्रज्ञा पाठशाला, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
13. डॉ. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
14. डॉ. माधव सोनटके, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रयुक्ति और अनुवाद, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
15. कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रकिया और स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005
16. डॉ,. संजीव कुमार जैन, प्रयोगजनमूलक कामकाजी हिन्दी एवं कम्प्यूटिंग, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
17. संतोष गोयल, हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर; श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
18. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली